ग्रीष्मावकाश क्रियात्मक कार्य

कक्षा चतुर्थ

- किन्हीं दो साहसी बच्चों से संबंधित लेख को A4 साइज शीट पर चिपकाइए।
- एकता के महत्त्व को बताते हुए एक कहानी लिखिए एवं संबंधित चित्र को A4 साइज शीट पर बनाइए अथवा चिपकाइए।
- 10 प्राकृतिक वस्तुओं के नाम और उनके दो-दो पर्यायवाची शब्द चित्र सहित A4 साइज शीट पर बनाइए अथवा चिपकाइए।
- संलग्न कविताओं की पीडीएफ से अपने सदन के अनुसार कविता याद कीजिए।

दो चिड़ियाँ

घर की चिड़िया थी पिंजरे में
वन की चिड़िया वन में।
मिली अचानक एक दिवस वे
थी कुछ विधि के मन में ।

वन की चिड़िया बोली तब यों
"सुन री पिंजरे वाली,
उड़ चल वन को मेरे संग तू
कर दे पिंजरा खाली।"

बोली पिंजरे की चिड़िया तब
"सुन री चिड़िया वन की,
तू भी आ, बस जा पिंजरे में
बात करें दो मन की।"

"मैं क्यों फँसू भला बंधन में,
वन की चिड़िया बोली।,
हो उदास पिंजरे की चिड़िया
मन ही मन में रो ली।

"छोड़ चलूँ सोने का घर मैं,
भटकूँ जाकर वन में।
"घर की चिड़िया थी पिंजरे में,
खन की चिड़िया वन में।

आगे बढ़ें

नहीं अंधविश्वास पर देना कोई ध्यान ।
जो इसमें रहता फँसा, देना उसको ज्ञान ।।

अपने आप नहीं मिले, किसी जगह सम्मान ।
काम अगर अच्छा रहे, सब देते तब ध्यान ।।

सागर को भी आदमी, कर जाता है पार ।
अंदर जब हो हौसला, जुड़ते जाते तार ।।

आगे जाने के लिए, करना रोज़ प्रयास ।
ऐसा कर हर आदमी, रच पाता इतिहास ।।

अगर पढ़ाई कर रहे, जम करके दिन रात ।
कोई कैसा विषय हो, हो जाता सब ज्ञात ।।

हरियाली को देखकर, पशु पक्षी खुशहाल ।
फिर मानव क्यों पेड़ का, बन जाता है काल ।।

भला आदमी हर जगह, पाता पूरा मान ।
हीरा छिप पाता नहीं, भले कोयला खान ।।

बच्चे होते उस तरह, जैसे जल की धार ।
जिस बर्तन में डालिए, बनते उसी प्रकार ।।

रुको नहीं चलते रहो

नदी सा चल सरोवर सा रुक नहीं
अपनी ख्वाहिशो को सीमित कर नहीं
अभी ख्वाहिशो के परिंदो की उड़ान बाकि हैं।
क्या फ़िक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकि है

तेरे सब्र का इम्तहान बहुत से लेगें
तेरी खामोशियों को तेरी कमजोरी समझेगें
अभी खामोशियों के पीछे की ज्वाला बाकि हैं
क्या फ़िक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकि हैं

बिन मेहनत मिली सफलता पीतल हैं।
अंदर से ज्वाला बाहर से शीतल हैं।
अभी सोने को कुन्दन बनना बाकि हैं
क्या फ़िक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकि हैं

जो सोच लिया तूने समझो पा लिया
सफलता की ओर कदम तूने बढ़ा लिया
अभी सफलता का शीर्ष झुकना बाकि हैं।
क्या फ़िक्र तुझे अभी पूरा जहान बाकि हैं।

GAMMA

माँ

उदास होता हूँ तो हँसा देती है माँ
नींद नहीं आती है तो सुला देती है माँ
मकान को घर बना देती है माँ
खुद भूखी रह कर भी मेरा पेट भरती है माँ

जमीं से शिखर तक साथ देती है माँ
जन्म से आंखरी सांस तक साथ देती है माँ
जिंदगी में मुश्किले चाहे कितनी भी हो
हँस के गुजार लेती है माँ

परिवार छोटा हो या बड़ा सम्भाल लेती है माँ
मेरी आँखों में छुपी हर एक ख्वाइस को पहचान लेती है माँ
मेरे हर दर्द की दवा करती है माँ
मेरी हर खता को माफ़ कर देती है माँ

रिश्तों को जोड़ती है माँ
बिना किसी स्वार्थ के प्यार देती है माँ
परिवार खुश होता है तब खुश होती है माँ
तू चाहे सन्तान ना हो उसकी फिर भी दुलार देती है माँ

पुस्तक हमारी सच्ची साथी

पढ़ने में ही शक्ति है,
पढना सच्ची भक्ति है;
पुस्तक में ही ज्ञान है,
देश का यह निर्माण है।

पुस्तक में हैं बरइबल–गीता,
पुस्तक में कुरान है।
पुस्तक में हैं ईसा–मूसा,
और कृष्ण भगवान है।

ईश्वर–अल्लाह की शिक्षा है,
गुरु नानक का ज्ञान है,
पुस्तक में भारत माता के,
आशीषों की खान हैं।

शब्द–शब्द में छुपा है इक
मंज़िल का आह्वान है।
पन्ने –पन्ने पर मुस्काता
हम सब का भगवान है।

पंक्ति – पंक्ति में प्रगति पथ पर
बढ़ता हुआ इंसान है।
पढने में ही शक्ति है,
पढना सच्ची भक्ति हैं।

मन का दर्पण

क्या खोजते हो दुनिया में,
जब सब कुछ तेरे अन्दर है।
क्यों देखते हो औरों में,
जब तेरा मन ही दर्पण है।

दुनिया बस एक दौड़ नहीं,
तू भी अश्व नहीं है धावक।
रुक कर खुद से बातें करले,
अन्तर मन को शान्त तो करले।

सपनों की गहराई समझो,
अपने अन्दर की अच्छाई समझो।
स्वाध्याय की आदत डालो,
जीवन को तुम खुलकर जीलो ।

आलस्य तुम्हारा दुश्मन है तो,
पुरुशार्थ को अपना दोस्त बनालो ।
जीवन का ये रहस्य समझलो,
और खुशीयों से तुम नाता जोड़ो।